सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा:-7 | **विषय: पाठ्यपुस्तक** | **पाठ:3 शतरंज की शक्ति**

शतरंज की शक्ति

(बोलकर)

(क) दिव्या देशमुख शतरंज खेल में निपुण थीं।

(ख) प्रतियोगिता का आयोजन जार्जिया नामक देश के बाटुमी में हुआ था।

(ग) शतरंज की इस प्रतियोगिता में कुल 107 महिला खिलाड़ी थीं।

(घ) दिव्या ने बहुत कम उम्र में शतरंज खेलना शुरू किया, क्योंकि उनके माता-पिता दोनों ने डॉक्टर होते हुए भी इन्हें खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए पूरा समर्थन दिया।

(लिखकर) लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) दिव्या देशमुख ने महिला शतरंज विश्व कप जीता था।

(ख) दिव्या देशमुख का जन्म 9 दिसंबर 2005 को नागपुर महाराष्ट्र में हुआ। उनके माता-पिता दोनों ही डॉक्टर हैं।

(ग) भारत देश से दिव्या देशमुख, कोनेरू हंपी और हरिका द्रोणावल्ली ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया।

(घ) दिव्या देशमुख की ऐतिहासिक जीत पर भारत सरकार ने 3 करोड़ रुपए का नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-(केवल ख और घ कॉफी में करें)

(क) दिव्या देशमुख ने अपनी मेहनत और लगन से मात्र 19 साल की आयु में विश्व कप जीत लिया, हमारे विचार से इसका सबसे बड़ा कारण यह हो सकता है कि यदि कोई व्यक्ति अपनी मंजिल को प्राप्त करने का ठान ले और उसके लिए अथक प्रयास करे, तो वह अवश्य सफल होगा।

(ख) यदि हमारे परिवार में कोई खेल में अपना लक्ष्य बनाना चाहे तो हम उसे पूरा सहयोग प्रदान करेंगे। उसे जहां हमारी आवश्यकता होगी, वहाँ हम उसके साथ खड़े होंगे। हम धन से, इच्छा शक्ति से, हर प्रकार से उसे सहयोग देंगे।

(ग) दिव्या की सफलता में उनके माता-पिता की बहुत अहम भूमिका रही, क्योंकि अक्सर देखा जाता है कि जो माता-पिता डॉक्टर होते हैं, वे अपने बच्चों को थी डॉक्टर बनाना चाहते हैं। परंतु दिव्या के माता-पिता ने दिव्या की इच्छा को ध्यान में रखते हुए उन्हें खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ाने में पूरा समर्थन दिया।

(घ) सफलता के लिए प्रतिभा होना तो आवश्यक है ही, परंतु उससे भी ज्यादा आवश्यक है- अभ्यास और मेहनत। कई बार प्रतिभा न होने पर भी लोग अभ्यास और मेहनत से अपने अंदर प्रतिभा या काबिलियत पैदा कर लेते हैं।

पठित गद्यांश (केवल किताब में)

(क) पाठ- शतरंज की शक्ति लेखक- नितिन जैन

(ख) यह जीत उन अनगिनत लड़कियों की आशाओं और हौसलों की जीत थी, जो सपने देखने की हिम्मत करती हैं।

(ग) उपसर्ग उप, मूल शब्द लब्धि

(घ) दिव्या देशमुख की उपलब्धि दर्शाती है कि उम्र चाहे छोटी हो या बड़ी, अगर लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत निरंतर हो, तो कोई भी सफलता मुश्किल नहीं है।